nwda.gov.in

जलाशय व तालाब रखें दुरुस्त, खुद बढ़ेगा भूजल

प्रो. शशांक शेखर
भूगर्भ शास्त्र विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

राजधानी में पानी की समस्या को कम करने में भूजल एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है। लेकिन, इसके लिए वर्षा जल का संचयन जरूरी है। राजधानी में पिछले दिनों में इसमें सुधार जरूर हुआ है, पर लक्ष्य से अभी काफी दूर हैं। वर्षा जल संचयन के लिए कठोर कदम की जरूरत है। हाउसिंग सोसायटी में रेन वाटर हार्वेस्टिंग की व्यवस्था उतनी नहीं है। साल में इसकी सफाई की जरूरत होती है। जिन्होंने लगाया है, वे भी ठीक से काम नहीं कर रहे हैं। और जो लगे हैं उनकी संख्या काफी कम है। इसका कारण रेन वाटर हार्वेस्टिंग व्यवस्था का नक्शा पास कराने तक सिमटना है। एक बार कोई लगा भी ले तो बाद में उस पर ध्यान नहीं देता। राजधानी में फिलहाल 10,321 भवनों में ही वर्षा जल संचयन की व्यवस्था है। आम नागरिकों के भवनों में यह संख्या 3,200 ही है। शेष 4,549 जल संरक्षण प्रणाली स्कूल और कालेजों में लगी है। इससे घरों में लगने वाले रेन वाटर हार्वेस्टिंग की स्थिति को समझा जा सकता है। दिल्ली की आबादी की तुलना में यह काफी कम है। ऐसे में जो पानी वर्षा से आ रहा है, उसको उसे बचाया नहीं जा रहा। आगे भी व्यवस्था में बहुत बड़ा परिवर्तन हो, यह जरूरी नहीं है। हाल में एनजीटी ने ध्यान दिलाया था कि द्वारका में घरों में वाटर हार्वेस्टिंग का पानी नाले में जा रहा था। उनकी सफाई कई दिनों से नहीं हुई थी। इसलिए वर्षा जल को बचाने के लिए दूसरे पहलुओं पर गौर करना जरूरी है। जिनमें राजधानी के प्राकृतिक जलाशय और तालाब शामिल हैं। जिनकी संख्या 900 से अधिक है। इनका अच्छी तरह से विकास जरूरी है। इनके जरिये वर्षा के जल को जमीन के अंदर ठीक तरह से पहुंचाया जा सकता है। इनके विकास के वक्त यह ध्यान देना जरूरी है कि यहां के पानी का वाष्पीकरण नहीं हो। अन्यथा सारी कवायद बेकार हो जाएगी। इनका विकास ऐसी तकनीक से किया जाए कि वाष्पीकरण से बचा जा सके। इनके आसपास पीपल के पेड़ लगाए जाने चाहिए। इन जलाशयों के आसपास कंक्रीट का निर्माण वर्षा जल संचयन में बड़ी समस्या है। इससे पानी नालों के जरिये होकर नदी में चला जाता है। इसलिए इन तालाबों व जलाशयों का विकास ऐसे होना चाहिए ताकि वर्षा जल संचयन इनका प्रमुख उद्देश्य हो। रेन वाटर हार्वेस्टिंग के लिए जागरूकता और इनकी सफाई की व्यवस्था पर सरकार को ध्यान देने की जरूरत है। विशेषतौर पर दक्षिण और दक्षिण पश्चिम दिल्ली के इलाके ऐसे हैं, जहां पानी का दोहन अधिक होता है। यहां पानी सर्वाधिक गहराई में है। यहां बोरिंग भी बड़ी संख्या में लोगों ने कराए हुए हैं। एयरपोर्ट वगैरह में पानी की आपूर्ति के लिए भी पानी का इस्तेमाल अधिक है। कुछ इलाके ऐसे हैं, जहां खेती का कार्य होता है। इसलिए इन जगहों पर स्थित जलाशयों को सुनियोजित विकास होना चाहिए और घरों में रेन वाटर हार्वेस्टिंग ठीक से संचालित होनी चाहिए। ताकि इस स्थान के नीचे जमीन के पानी को ठीक किया जा सके। दिल्ली के पश्चिम में 30 मीटर तक पानी पीने योग्य हैं, शेष पानी खारा है। यहां उतनी समस्या नहीं है, लेकिन अभी से ध्यान दिए जाने की जरूरत है। पूर्वी दिल्ली के इलाकों में 30 मीटर गहराई तक पानी है। यमुना के नजदीक होने पर यह बरसात में पानी परिपूरित हो जाता है। यहां के पानी का उपयोग किया जा सकता है। भूजल स्तर को बढ़ाने के लिए अच्छी योजना की जरूरत है। योजनाबद्ध तरीके से ही जलाशय विकास और रेन वाटर हार्वेस्टिंग लगाए जाने चाहिए। ऐसे ठोस प्रयासों के परिणाम आने में थोड़ा वक्त जरूरी लगेगा, लेकिन वे परिणाम सुखद होंगे।

जैसा कि लेखक ने उदय जगताप को बातचीत में बताया